নির্গ্রন্থ

प्रकाशक :
भीलवाड़ा संस्कृति संसद
भीलवाड़ा
(राजस्थान)

•

मूल्य दस रुपया

•

•

मुद्रक
मातादीन खंडारिया
नेशनल प्रिंट क्राफ्ट्स
६५ए, चितरंजन एवेन्यू
कलकत्ता-१२

प्रभाती

'निर्ग्रन्थ' अनुकम्पा के परम क्षण की प्रतीक कृति है। सर्वोदय तीर्थ के प्रवर्तक महावीर की देशना ही युगीन निशीथ की संभाव्य उषा है। मैं नेपथ्य में चेतना की विपंची पर झंकृत प्रभाती की लय स्पष्ट सुन रहा हूँ!

परिनिर्वाण महोत्सव
वि० सं० २०३२

कन्हैयालाल सेठिया

क्षितिज

रश्मियां		दिशा निर्देश
१.	निर्ग्रन्थ	१
२.	अर्हत्	२
३.	अनेकान्त	३
४.	बीज मंत्र	४
५.	मूल्यांकन	५
६.	सिद्ध शिला	६
७.	निर्वेद	७
८.	त्रिशला का स्वप्न	८
९.	हिर[illegible]ीप	९
१०.	चंडकौशिक	१०
११.	समाधि	११
१२.	चतुष्टय	१२
१३.	अपरिग्रह।	१३
१४.	णमोकार मंत्र	१४
१५.	अहिंसा	१५
१६.	वीतराग भगवन्त	१६

१७. अंजुलि भर जल १७
१८. कबीर की चादर १८
१९. विस्मृति १९
२०. विभाजित व्यक्तित्व २०
२१. अच्युत २१
२२. ईश्वर २२
२३. अर्थवत्ता २३
२४. अंखुवाया दर्शन २४
२५. प्रश्न हुए उत्तर २५
२६. फगुनाया क्षण २६
२७. हमराही २७
२८. मूल्य मुक्त २८
२९. अवरोध २९
३०. अपेक्षा ३०
३१. अधिकार ३१
३२. माध्यम ३२
३३. मार्क्स ३३
३४. सापेक्ष निरपेक्ष ३४
३५. जेता ३५
३६. यात्राएं ३६
३७. असहाय ३७
३८. निरक्षर ३८
३९. अस्तित्व ३९
४०. जीवित-मृत्यु ४०
४१. विभ्रम ४१
४२. समर्पण का क्षण ४२
४३. श्रीवत्सासांदन ४३
४४. उपलब्धि ४४
४५. भीड़ ४५

रश्मियां	दिशा निर्देश
४६. नियन्ता	४६
४७. पदातीत	४७
४८. केवल एक गीत	४८
४९. दृष्टि	४९
५०. मरीचिका	५०
५१. रागिनी	५१
५२. यंत्रवाद	५२
५३. अन्तःस्थिति	५३
५४. तुम और मैं	५४
५५. एक बची चिनगारी	५५
५६. प्रक्रिया	५६
५७. आदर्श	५७
५८. काल व्याल	५८
५९. चिति क्षिति	५९
६०. कस्तूरा	६०
६१. कवि	६१
६२. छवि की मछली	६२
६३. तृप्ति-तृषा	६३
६४. अनुभूति	६४
६५. रूप-स्वरूप	६५
६६. शब्द	६६
६७. यात्रा	६७
६८. स्याद्वाद	६८
६९. क्षमता	६९
७०. रहस्य	७०
७१. लक्ष्मण रेखा	७१
७२. प्रतिध्वनि	७२
७३. अग्नि	७३
७४. अव्यक्त	७४

रश्मियां

७५. चेतना का क्षण
७६. ज्ञाता
७७. निरपेक्ष
७८. सत्य
७९. तथागत
८०. अहिल्या
८१. साक्षी
८२. विभूति

दिशा निर्देश

७५
७६
७७
७८
७९
८०
८१
८२

पितामह



स्व० रूपचन्दजी सेठिया

पितामही



स्व० जड़ावदेवीजी सेठिया

स्व०
पितामह
रूपचंदजी सेठिया
पितामही
जड़ावदेवीजी सेठिया
को

निर्ग्रन्थ !

नहीं दबे
अढ़ाई हजार वर्षों के
मलबे के तले
महावीर
बिखर गये
छू कर
मन्वन्तर संवत्सर
बन गई
चिति ही स्थिति
हो गया निमज्जित
महाध्यान में
काल का कोलाहल
बन गया
दिगम्बरत्व का दर्पण
यह महाकाश
नहीं हुए ग्रथित
सन्दर्भों की ग्रन्थियों में
केवली निर्ग्रन्थ !

अर्हत् !

लड़ते रहे
अर्हत् बनने तक
अकेले ही युद्ध
झेलते रहे
स्वयं ही संघर्ष की पीड़ा
क्यों कि
देवताओं के हाथ में थे
केवल उपसर्ग
और दुन्दुभियां !

अनेकान्त !

तोड़ कर
पुराने आभूषण
नहीं बनाया
कोई नया आभरण
नकार कर
स्थापित मूल्य
नहीं रचा
कोई नया प्रतिमान
केवल दी
मूर्च्छा विमुक्त दृष्टि
बन गया
अनेकान्त
सत्य की मुक्ति !

बीज मंत्र

किसी ने
बांटे फल
किसी ने फूल
किसी ने किसलय
पर दिन ढले
सब गले
कुम्हलाये मुरझाये
तुम आये
बांटा बीज मंत्र
'अनुकम्पा'
कहा बन
आत्मा का माली
कर कषाय से
रखवाली
बच जायेगी
बगिया की हरियाली!

मूल्यांकन !

तुम
जनमे थे राजकुल में
पले थे ऐश्वर्य के बीच
नहीं थकते दुहराते इसे
तुम्हारे शिष्य
तुम्हारे भक्त
हुये जिस से तुम मुक्त
उसी में भुक्त
करते रहे हैं वे
आज तक
राग के सन्दर्भ में हो
विराग का मूल्यांकन
अब छोड़ना होगा
इस केंचुल का मोह
अन्यथा कहेंगे
युग चेतना के संवाहक
तथाकथित अकुलीन और अकिंचन
थी अबाध भोग की
प्रतिक्रिया मात्र
महावीर की देशना !

सिद्ध शिला !

कर देगा
तिरोहित
मन्वन्तरों का संचित तम
प्रकाश का एक क्षण
होते ही
स्व की स्फुरणा
टूट जायेगी
घनीभूत मूर्च्छा
नहीं है गहरी
असत् की जड़
पुरुषार्थ की पकड़ में है
श्रेयस् का पंथ
अनुबंधित है
गति से
मील का अन्तिम पत्थर
सिद्ध शिला !

निर्वेद !

नहीं की तुम ने
महाभिनिष्क्रमण के लिये
किसी की नींद की प्रतीक्षा
स्वयं जागे
जगाया वातावरण
दिया बोध
संयोग वियोग
प्रतिक्रियाएं
नहीं है उनका
अपना कोई अस्तित्व
संवेदना
मरीचिका पुद्गल की
आत्मा का गुण
निर्वेद !

त्रिशला का स्वप्न !

दी सूचना
सपनों ने
तुम्हारे आगमन की
मिला
निरर्थकता को
नया अर्थ
खुली आंख
वर्तमान
बन्द आंख
भविष्य !

हिरण्य-पुरुष !

नहीं रमाई
धूनी
तपे
निर्धूम अन्तःतप
दी
कर्म-काष्ठ की हवि
प्रकटा
चेतना की मरीचियों मे
हिरण्य-पुरुष
बन गया
स्व ही समग्र !

चंडकौशिक !

था तुम्हारा ही
निष्कासित क्रोध
चण्डकौशिक
छूटा विवर
नहीं भूलता विषधर
किया दंशित
पर था वहां
'केवल'
व्यापता कहा
गरल !

रच कर
अनेक उपसर्ग
हार गया
अन्धे विश्वास का मुखौटा–
शूलपाणि,
आधि व्याधि
नहीं कर सकी भंग
अभंग समाधि
प्राप्त था भाव मोक्ष
था केवल
कर्म भोगों से अनुबन्धित
द्रव्य मोक्ष
लौट गई यातनाओं की
शतफणा उर्म्मियां
रहा अचंचल, चेतना का तल
बन गया उत्क्रान्त
ध्यान का उत्कर्ष
सहज ही पहुँच गये
तेरहवें गुण स्थान
टूट गये बन्धन
बने सर्वज्ञ
हुआ अनुभूत
कैवल्य !

चतुष्टय !

किया
भीड़ की भाषा में
अनुभूत की अभिव्यक्त
बन गया
सत्य को सुनने का
सम अवसर
समवसरण
बांटे
रत्न त्रय
हुये उद्भासित
दिव्य अतिशय में
आत्मा के
अनन्त चतुष्टय !

अपरिग्रह !

ज्ञान का नवनीत
दर्शन का अमृत
चारित्र की कौस्तुभ मणि
तप की उपलब्धि
भूति की विभूति
कैवल्य की भूमिका
अपरिग्रह
यह शतदल
पंखुरियां
व्रत यम नियम
इति यह
अथ संयम !

णमोकार मंत्र !

नहीं किसी
याचक की प्रार्थना
कि देवता
पूरी करें कामना
नहीं किसी
संत्रस्त की गुहार
कि इन्द्र करें
रिपु का हनन
केवल नमन
उनको
जो अरिहन्त
जो सन्त
भले ही उनका
कोई धर्म
कोई पन्थ
मात्र समर्पण की
वर्णमाला
णमोकार मंत्र !

अहिंसा !

नहीं है
हिंसा का
नकारात्मक बोध
अहिंसा
एक मौलिक शोध
चित्य है जिसमें
दृष्टि से परे
दर्शन
जीवन से परे
आत्मा
जिसकी
मीमांसा
अनेकान्त
भूमिका
सर्वोदय !

वीतराग भगवन्त !

करो ग्रन्थि से मुक्त मुझे हे
वीतराग भगवन्त !

ज्ञान गौण, दर्शन अनुरंजन
सर्वोपरि चारित्र,
मर्म मुझे दो आत्म धर्म का
जीवन बने पवित्र,
करूं स्वयं पर अनुकम्पा मैं
पकड़ तुम्हारा पन्थ !

बन न सका नवनीत, मथ रहा
कब से जाने तक्र ?
कर समग्र अब छूटे मेरा
जनम मरण का चक्र,
मुझे सताते हैं भव भव के
बांधे कर्म अनन्त !

नहीं समन्वय मुझ से मेरा
छलना मेरे छन्द,
पूर्ण नहीं संवेदन, चलता
प्रिय अप्रिय का द्वंद्व,
दो समत्व में तत्व समझ लूं
कृपा सिन्धु अरिहन्त !

अंजुलि भर जल !

यह कंचन भरित घट
कहां समायेगा नीर
नहीं है पनघट
अपने आप में कोई तृप्ति
केवल उसके दायरे में है
चेतना का तल
चुनना होगा तुम्हें
स्वर्ण या अंजुलि भर जल !

कबीर की चादर !

नहीं थी
कबीर की चादर में
कहीं कोई गांठ
खुले थे चारों छोर
फिर भी
सन्ध्या भोर
टटोलती रही
भक्तों की भीड़
कि होगा कहीं
चिन्तामणि रतन
नहीं तो बाबा
काहे को करते
इतना जतन !

विस्मृति !

कब से
बजा रहा हूँ
तम्बूरा
नहीं आता याद
भूला हुआ एक गीत
बन गई विस्मृति
शत शत
नये गीतों का उत्स !

विभाजित व्यक्तित्व !

धार
काट रही कगार
नहीं जानती
गिरेगा टूट
उस में ही
होगा रुद्ध
मछलियों का अबाध सन्तरण
लौट जायेंगी नौकाएं
बन जायेगा
लहरों की कानाफूसी
एक विभाजित व्यक्तित्व !

रच सकते हैं,
अच्युत ही
महारास
बंधी हुई है
उनके ही स्थिर से
गोपिकाओं की च्युति
गूंजता है
रागिनियों के वैविध्य में
उनका ही ओंकार
व्यक्त है
उनकी ही लीला में
अव्यक्त ऋतम्भरा !

ईश्वर !

आकाश का मौन हो
ध्वनि है
ध्वनि की गति हो
शब्द है
शब्द की रति हो
स्वर है
स्वर की यति हो
भास्वर है
भास्वर की प्रतीति हो
ईश्वर है !

अर्थवत्ता !

नहीं कर पायेंगे
अभिव्यक्त
पराये शब्द
तुम्हारा मौलिक द्वंद्व
नहीं टूट पायेगा
प्रतिध्वनियों का व्यूह
बिना सुने स्वयं की ध्वनि
डूबना होगा पहले
अपने में ही आकंठ
देगा अर्थवत्ता
अनुभूति की
तल में बैठा
अनाकुल मौन !

अंखुवाया दर्शन !

तैर रही लहरें
डूब गया सागर
जाग उठे तारे
निंदियाया अम्बर,

पड़ी रही माटी
चली गई गागर
मुसका दी बिजुरी
अंसुवाया बादर,

मुंदे नयन सपने
खुली दीठ दर्पण
फलित हुआ चिन्तन
अंखुवाया दर्शन !

फगुनाया क्षण !

फगुनाये क्षण में
मनगाई गजल उगी
बौराये मन में
गीतों की फसल उगी,

सुलते भिनसारे
बनजारे सपन हुए
नयनों की भाषा
अनियारे नयन हुए,

श्याम साथ राधा
दोपहरी सांझ हुई
अब न रही बाधा
हुई दुई छुई मुई !

मूल्य मुक्त !

मूल्य मुक्त कर से चल मुझको
तू अमूल्य की ओर !
संशय निश्चय दोनों दुविधा
इन से परे विकास,
मृग मरीचिका क्षितिज, स्वयं की
सीमा है आकाश,
समय, समय है भोले दृग की
छलना सन्ध्या भोर !
पूर्ण नहीं है वस्तु, भाव में—
केवल उसका भास,
बांध सके चिन्मय को ऐसा
किस भाषा का पाश ?
कुम्भ कूप तक पहुँचे इतना
कर सकती बस डोर !
कंचन नहीं अकिंचन की ही
दुर्लभ है पहचान,
पंचभूत तो नग्न, तत्व ने
पहन लिया परिधान,
छुटा तुला की कारा पकड़ूं
मैं अतुल्य का छोर !

अवरोध !

हिमगिरि लांघ चला आया मैं
लघु कंकर अवरोध बन गया !

क्षण का साहस केवल संशय
अगर मूल में जीवित है भय ?

जलनिधि तैर चला आया मैं
उथला तट प्रतिरोध बन गया !

साध्य, विमुक्त स्वयं से होना,
द्वंद्व विगत क्या पाना खोना ?

हुआ समन्वय सब से लेकिन
निज से वही विरोध बन गया !

सूक्ष्म ग्रन्थिमय यह रेशम मन,
सुलझाने में उलझा चेतन,

क्रिया अहम् से इतनी दूषित
शोधन ही प्रतिशोध बन गया !

अपेक्षा !

आंखों में हैं
अनगिन धुंधे हुये सूर्य
मरे हुये सपने
आहत विश्वास
गूंगी जिज्ञासाएं
नहीं है अब
जागरण का कोई अर्थ
चाहिए एक
गहरी नींद
जिसकी क्रोड़ मे हैं
सद्यजात सपने
कुआंरे विश्वास
तुतलाती जिज्ञासाएं
और एक
नया सूर्योदय !

अधिकार!

चपल मन का मृग विंधे
तू दृष्टि का शर मार!
शब्द की हिंसा न हिंसा
जब अहिंसा अर्थ,
पारदर्शी के लिये है
आवरण सब व्यर्थ,
एक क्षण अनिमेष रह तू
कर मुझे अविकार!
था अहेरी खोजता यह
व्यथित कब से प्राण?
अब मिले तो दो सहज ही
तुम इसी क्षण त्राण,
बलि स्वयं करती निमंत्रित
आ तुम्हारे द्वार!
क्या नहीं है क्रूरता
करुणा स्वयं गंभीर?
वेदना की ज्वाल में ही
आंसुओं का नीर,
अहम जेता जो, उसे है
हनन का अधिकार!

माध्यम !

समा जाता है
अनायास ही
हिमालय
पर नहीं सह पाती
निरी किरकिरी
आंख
विराट का
माध्यम
नहीं बनता
क्षुद्र का विराम !

मार्क्स !

सामने था
जो कुछ
उस पर थी
मार्क्स की दीठ
रह गई अदीठ पीठ
जो थी पेट के पीछे
नहीं हुआ अनुभूत
साम्य का योग
हाथ लगा
अभिव्यक्ति का सत्य
साम्य भोग !

सापेक्ष निरपेक्ष !

नहीं स्वीकारता
झरा पत्ता
विटप की सत्ता
नहीं मानता
पल्लवित पादप
झरे पत्ते का अस्तित्व
बन गया
अतीत का सापेक्ष
वर्तमान का
निरपेक्ष दर्शन !

जेता !

समर जेता !
अपने से ही
पराजित तुम
सोचते हो
अचूक शर-सन्धान की
निरर्थकता पर
उस क्षमता पर
जिसने तुम्हें बना दिया है
आज इतना अक्षम
कि मात्र भ्रम
लगता है स्वयं का अस्तित्व
सुन पड़ती है
जयनादों के गगन भेदी
कोलाहल मे
एक धीमी कराह
उस घायल चेतना की
रख दिया है
जिसके उरस पर
तुम ने
अपने अहम् का
शिला खण्ड !

यात्राएं !

वैशाखियां लिये
शरीरों को
करते हैं यात्राएं
अपग विचार
धकेलतो रहती हैं
दूर से दूर
मंजिलों को
जिज्ञासाओं की मरीचिकाएं
क्षण का विराम
आगत की सभ्यता
अनागत की संस्कृति
इन्हीं अपनी थकानों से
करती है संघर्ष
फिर गति !

असहाय !

कर दिया
तरंगित
कंकर ने
अपार अर्णव
नहीं सह पाया
घनीभूत तारल्य
हलकी सी चोट
आया लौट
छू कर
सुदूर तटों को
विक्षोभ का आवर्त
नहीं पाता उलीच
गहरस्र कर
रत्नाकर
यह कंकर !

निरक्षर !

खुले नयन से सपने देखो
बन्द नयन से अपने,
अपने तो रहते हैं भीतर
बाहर रहते सपने !

नाम रूप की भीड़ जगत में
भीतर एक निरंजन,
सुरति चाहिए अन्तर दृग को
बाहर दृग को अंजन !

देखे को अनदेखा कर रे
अनदेखे को देखा,
क्षर लिख लिख तू रहा निरक्षर
अक्षर सदा अलेखा !

अस्तित्व !

नहीं होगी
कभी सफल
भीड़ के नाम पर
व्यक्ति को निर्मूल्य
बनाने की
घृणित साजिश
बन जायेंगी
यातनाएं ही
आत्म कथाएं
नहीं लील पायेगा
अजगरी आकाश
बन्दूक के
हर धमाके की
गूंज का
अलग अस्तित्व !

जीवित-मृत्यु !

सिवाय आत्म हत्या के
नहीं है दूसरा कोई उपाय
तुम असहाय
नहीं बन पाओगे
अपनी मान्यताओं के प्रतिबिम्ब
दफनाना होगा
अपने ही अन्दर
अपना जीवित सत्य
होती ही है
हर पूजा स्थल के आंगन में
कुछ रहस्यमयी कब्रें
लिख कर जिनके पट्ट पर
प्रवंचना की भाषा
बना देते हैं
बधिक
बेचारी बलि को
शहीद !

विभ्रम !

नीड़ नहीं करता पंछी की
पल भर कभी प्रतीक्षा,
गगन नहीं लिखता पंखों की
अच्छी बुरी समीक्षा,

दीप नहीं लेता शलभों की
कोई अग्नि परीक्षा,
धूम नहीं काजल बनने को
करता कभी अभीप्सा,

प्राण स्वयं ही केवल अपनी
तृषा तृप्ति का माध्यम,
तत्व सभी निरपेक्ष अपेक्षा
मन का मीठा विभ्रम !

समर्पण का क्षण !

कर दिया है
खंडित
शब्दों ने
कुँआरी प्रार्थनाओं का शील
कामनाओं ने
अछूते एकान्त का देवत्व
अहम् ने
समर्पण का अक्षत क्षण !

श्री वत्स लांछन !

नहीं डूबा
प्रबल प्रवाह में
असंग द्वीप
भर आये
आवर्तों के मुंह में झाग
हो गया
अर्थहीन
सर्वग्रासी लहरों का
दुराग्रह
रहा बन कर
अतल गहराईयों के
वक्ष पर
श्री वत्स लांछन !

उपलब्धि !

उतर कर
गहरे मे
बन गया
तट
तल
ऊपर
उद्वेलित लहरें
नीचे
शान्त जल
छूट गये
शंख सीप
विद्रुम द्वीप
हाथ लगे
मुक्ताफल !

भीड़ !

देखा है
भीड़ को
ढोते हुए
अनुशासन का बोझ
उछालते हुये
अर्थहीन नारे
लड़ते हुये
दूसरों का युद्ध
खोदते हुये
अपनी कब्रें
पर नहीं सुना कभी
तोड़ लिया हो
किसी भीड़ ने बलात्
व्यक्ति की
अन्तश्चेतना में खिला
अनुभूति का
अम्लान पारिजात !

नियन्ता !

नहीं है
वर्तमान का समाधान
हथेलियों का भविष्य
दे सकती हैं केवल
बन्द मुट्ठियां ही
चुनौतियों का उत्तर
नहीं बदल पायेंगे
ग्रह नक्षत्र
समय का निर्धारित, मार्ग
समर्थ हैं
केवल चरण
चुनने में
अपना लक्ष्य
बन जायेगी
नियति
गति के
मील का पत्थर !

पदातीत !

बन गया है
समय के सन्दर्भ में
सत्य
असत्य
नहीं कर पायेंगी
जीवन्त को व्यक्त
मृत परिभाषाएं
त्यक्त कंचुक हैं
शब्द
पदातीत का
बोध
अशब्द !

केवल एक गीत !

ठहर गईं
शून्य पर आंख
पांख बन गईं
प्रश्न चिन्ह
उडान का उत्तर
केवल नीड़
निरुत्तर प्रेरणा
बस एक गीत
वेदना की उपलब्धि !

दृष्टि !

भर लिये हैं
विदेशी मित्रों ने
कमरे में
निर्वसन यौवन
याचक चेहरे
अकिंचन दारिद्रय
क्योंकि
नहीं पाते
शीर्ष स्थान
पश्चिम के
प्रचार कक्षों में
दिगम्बर महावीर
भिक्खु बुद्ध
लंगोटिये गांधी के
छवि चित्र !

मांगती हैं
भूखी इन्द्रियां
भूखी इन्द्रियों से भीख
मान लिया है
स्खलन को ही
तृप्ति का क्षण
नहीं होने देता विमुक्त
इस मरीचिका से
अघोरी मन
बदल बदल कर मुखौटा
ठगता है
चेतना का चिन्तन
होते ही
पटाक्षेप
बिखर जायेगी
अनमेल
पंचभूतों की भीड़ !

रागिनी !

भले हो
फूंकते रहो बांसुरी
बिना धरे
छिद्रों पर अंगुलियां
नहीं निकलेगी
प्रणय की रागिनी !

यंत्रवाद !

यंत्र
षड़यन्त्र
मस्तिष्क का
बन गया
श्रम विमुक्त
आदमी असुर
नहीं झरता अब
रोम कूपों से
स्वेदामृत
विस्मृत ऋत
शासित इड़ा
निर्वासित श्रद्धा !

अन्तःस्थिति !

पर्याय
प्रतिकृति
संचित कर्मों की
आत्मा लिंगातीत
करे कोई भी
पुरुषार्थ
होगा तिरोहित
आच्छादन
सिद्धत्व का अधिकारी
अप्रमत्त प्राण
निर्वाण
एक अन्तःस्थिति !

तुम और मैं !

उपलब्धि
तुम्हारी
अंक के पीछे
अनेक शून्य
मेरी
मात्र शून्य
तुम
अपने में अन्य
मैं
मेरे में अनन्य !

एक बची चिनगारी !

एक बची चिनगारी चाहे
चिता जला या दीप !

जीर्ण थकित लुब्धक सूरज की
लगने को है आंख,
फिर प्रतीची से उड़ा तिमिर खग
खोल सांझ की पांख,

हुई आरती की तैय्यारी
शंख खोज या सीप !

मिल सकता मन्वन्तर क्षण का—
चुका सको यदि मोल,
रह जायेंगे काल कंठ में
माटी के कुछ बोल,

आगत से आबद्ध गतागत
फिर क्या दूर समीप !

एक बची चिनगारी चाहे
चिता जला या दीप !

प्रक्रिया !

टूट गया है
भीड़ से जुड़ने की
प्रक्रिया में
आदमी
चिपका दिया गया है
समाजवादी गोंद से
हथेलियों की जगह
मस्तिष्क
पगथलियों में
हृदय
पहुंच पाता है अब
पेट और शिश्न
तक ही
रक्त का दौर !

आदर्श !

सही है
धूल
बनाती है
दर्पण
पर
बीज रूप में
रहते हैं
उसमें कुछ कण
जिनमें हैं
आदर्श
बनने के
गुण !

काल व्याल !

जन्मा हूँ
उस क्षण से
फण है
काल व्याल का
सिर पर
सुधा कुम्भ पर
टिकी
न हटती
विष की दृष्टि
निमिष भर
गीतों की–
मधु बीन सहारे
वार बचाऊँ
कब तक ?
राग
थका जाता है
लेगा
दंशित कर
अब तक्षक !

चिति क्षिति !

चिति क्षिति है अद्वैत, द्वैतमय
केवल उनका दर्शन,
रूप अरूप नहीं प्रतिद्वन्दी
बंधा बिम्ब से दर्पण,

अचिर भूत में व्यक्त भूतिमय
चिर अवधूत निरंजन,
शब्द मुक्त पर शब्द युक्त है
चिन्त्य अचिन्त्य चिरंतन,

सत्य शिवम् है सत्य सुन्दरम्
संज्ञा स्वयं विशेषण,
व्यर्थ व्याकरण, नान्त सान्त का
क्या होगा सम्बोधन ?

कस्तूरा !

फिरा
अपनी ही गन्ध से
अन्ध
कस्तूरा
वन-वन
उत्स का
अज्ञान
बन गया
व्याध का
सन्धान !

जो हृदय व्योमवत्
विगत कलुष,
उभरेगा उसमें
इन्द्रधनुष,

रचना का कारण
शून्य स्वयं,
मम त्वम् से जिसका
मुक्त ग्रहम् !

छवि की मछली !

डूब गई
विरह के अतल में
प्रतीक्षा की
तरी
तड़पती रही
पुतली के जाल में
छवि की मछली !

तृप्ति-तृषा !

टूटा सिलसिला
फुनगी पर फूल खिला,
मरा तो गहरा
अपना ही मूल मिला,

गगन से पगला—
परिमल पय भूल मिला,
फिरा तो सिहरा,
डाली पर शूल मिला !

अनुभूति !

जाता है
किनारे तक
हर लहर के साथ
मंझधार
जानता है
यह सत्य
केवल
पारावार !

रूप-स्वरूप !

कुम्हलाया
देवता तक
पहुंच कर भी
फूल
रहा अम्लान
धूल में
गिर कर भी
फूल !

शब्द !

शब्द !
मौन के फणि की
मणि
नहीं मात्र
काच की गुरिया
पिरो ले जिसे
हर कोई !
उठाये वह
जो मंत्रकार
'अन्यथा
गरल दंश
दुर्निवार !

यात्रा !

मात्र है
राजमार्ग
अभिव्यक्ति का
शब्द, छन्द, मात्रा,
होती है शुरू
मौन के बीहड़ से
अनुभूति की यात्रा !

स्याद्वाद !

दीखेगा
निशान्त सूरज
बोली आशा
फुसफुसाया
सत्य
बादल, कुहासा ?

क्षमता !

कौन से
क्षण में
टकरायेगा
किस चेतना का
रागावेग
किस चेतना से
जानते हैं इसे
मात्र केवली
पर रह कर
निर्वेग
बेध सकते हो
इस व्यूह को तुम
अगर जान लो कि
स्वयं में ही है
स्वयं पर
अनुकम्पा करने की
क्षमता !

रहस्य !

आशंका है
तुम्हें
जिस दुर्घटना की
घट चुकी है वह
पहले ही भीतर
केवल आयेगा
तैर कर
गत
आगत की
सतह पर !

लक्ष्मण रेखा !

क्षण की
लक्ष्मण रेखा के
पार
खड़ा है रावण
धरते ही
चरण
होगा
हरण
करेंगे
अनुसरण
श्री नारायण
लिखी
जायेगी
फिर रामायण !

प्रतिध्वनि !

प्रायः
अपने को नकार कर
सोचता है आदमी
दूसरों के बारे में
भटकता है अंधियारे में
निकालता है
खाकर चोट
पत्थरों को गालियां
करता है निन्दा रास्तों की
सुन कर
अपनी ही प्रतिध्वनि
भींचता है मुट्ठियां
पीसता है दांत
नोचता है
चेतना के पंख
नहीं देख पाता
आत्मा का
निरभ्र आकाश !

अग्नि !

मात्र देह हैं
समिधाएं
वायु है
प्राण अग्नियों का
रख लेगी
क्षरित विभूति
मां वसुधा
ले लेगा
अक्षरित कनकाभा
पिता शून्य !

अव्यक्त !

दिया
अनुभूति को
परिधान
पत्थरों का
अनुदान
शब्दों का
अवदान
रंगों का
रहा फिर भी
अनभिव्यक्त
अव्यक्त
क्या देंगे उत्तर
छेनी
लेखनी
तूलिका
जो स्वयं
प्रश्न चिन्ह भर !

चेतना का क्षण !

खिलता है
रात में बेला
प्रभात में
शतदल
नहीं है
अपेक्षित
स्फुटन के लिए
उजाला, अन्धेरा
जागे जिस क्षण
चेतना
वही सवेरा !

निरपेक्ष !

डूबता है
सूरज
उगते हैं तारे
होगा कभी संशोधित
यह भ्रम ?
अभिव्यक्ति का माध्यम
शब्द
नहीं टूटने देगा
यह द्वंद्व
क्षितिजो के घेरे में बन्द
दृष्टियां
कैसे होंगी
निरपेक्ष निर्द्वन्द्व !

ज्ञाता !

धागे में
मणियां हैं कि
मणियों में धागा
ज्ञाता वह
जो शब्द में सोया
अक्षर में जागा !

निरपेक्ष !

डूबता है
सूरज
उगते हैं तारे
होगा कभी संशोधित
यह भ्रम ?
अभिव्यक्ति का माध्यम
शब्द
नहीं टूटने देगा
यह द्वंद्व
क्षितिजों के घेरे में बन्द
दृष्टियां
कैसे होंगी
निरपेक्ष निर्द्वन्द्व !

सत्य !

बन्द है
नग्न सत्य के
शयनागार का
वज्र द्वार
केवल है
एक सूक्ष्म दरार
फूटती है
जिसमें से
सुन्दरम् की किरण
बेध देती है
आर पार
कर लेते हैं
शिवम् से
साक्षात्कार
वे
जो हैं
असत्य की दृष्टि मे
अन्धे !

तथागत !

नहीं
गत
आगत
अनागत
निरवधि
जिसकी
उपलब्धि
वह
तथागत !

अहिल्या !

लग गई
तट पर हो
लहर की आंख
क्षुब्ध हुआ ज्वार
रहा बन
अहिल्या
एक और प्यार !

साक्षी !

कूल
साक्षी
मर्यादा का
निगल निगल जिसे
उगल देती हैं
सिन्धु की
स्मृति-मन्द लहरें !

विभूति !

रंगहीन यह गगन
नयन का रंग लिये है,
रूपहीन यह सपन
दृष्टि का रूप पिये है,

यह प्रतीति है मात्र
परम अनुभूति नहीं है,
जो विभूति है स्वयं
अपेक्षित भूति नहीं है !

विभूति !

रंगहीन यह गगन
नयन का रंग लिये है,
रूपहीन यह सपन
दृष्टि का रूप पिये है,

यह प्रतीति है मात्र
परम अनुभूति नहीं है,
जो विभूति है स्वयं
अपेक्षित भूति नहीं है !

अनाम—रत्नकृति 'अनाम' मिली। आपने एक नई विधा की ही सृष्टि नहीं की एक नया विधान भी साहित्य को दिया जिसके द्वारा आपके गीत भी अनुशासित हैं और दूसरी कृतियां भी। आप अमर कार्य कर रहे हैं।

—कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

प्रणाम—'प्रणाम' की कविताएँ मेरे मर्म पर बड़ी शक्ति से रेखापात कर गईं।

खुली खिड़कियां चौड़े रास्ते—नयापन और काव्यत्व दोनों से समृद्ध है।

—कुबेरनाथ राय

मर्म—'मर्म' गहरे में स्पर्श करनेवाली कृति है।

—जैनेन्द्रकुमार जैन

मर्म—'मर्म' की कविताएँ अद्भुत रूप से ऋद्धि-सिद्धि युक्त हैं। 'अर्थ अमित अति, आखर थोरे'

—नरेन्द्र शर्मा

मर्म—'मर्म' में असंभव संक्षिप्तता और अर्थ इतना अगाध कि सोचते रहिये, ओर-छोर न पाइये।

—राधाकृष्ण

आप गागर में सागर भरने की कला में सिद्धहस्त हैं।

—गंगाशरणसिंह

अनाम—कविता क्या मंत्र ही हैं ये। छोटे-छोटे सूत्रों में जीवन का गहन रहस्य—बधाई।

—डा० हरिवंशराय 'बच्चन'

मर्म—'मर्म' हिन्दी काव्य में एक नया ध्रुव।

अनाम—श्री अरविन्द ने कहा था, आगामी कविता सूक्ष्म मांत्रिक प्रभाव वाली होगी। आपकी इन कविताओं में वह भविष्यवाणी सच होती लगी। आप में भाव और चिन्तन की अद्भुत संयुति है। आप से मुझे ईर्ष्या हुई।

—वीरेन्द्रकुमार जैन

अनाम—'अनाम' की कविताएं बिहारी के दोहों की तरह 'नाविक के तीर' हैं। शिल्प और सार की दृष्टि से बड़ी प्रशंसनीय हैं।

—भवानीप्रसाद मिश्र

प्राप्ति-स्थान : जयप्रकाश सेठिया
३, मैंगो लेन, कलकत्ता–१